**National Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**ISSN: 2455-9040**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.nationaljournals.com**
**Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 825-826**

# प्राचीन भारतीय ज्ञानधारा के प्रवाह में काशी का महात्म्य

**डॉ. आशुतोष कुमार सिंह**
सहायक आचार्य (तदर्थ), प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

भारतीय परंपरा में काशी (वर्तमान वाराणसी) को सर्वविद्या की राजधानी कहा गया है। काशी अत्यन्त प्राचीन काल से ही विद्या और शिक्षा के क्षेत्र में एक अहम प्रचारक और केन्द्रीय संस्था के रुप में स्थापित थी। काशी हिन्दू शिक्षा केन्द्र के रुप में विश्वव्यापक हुआ। प्राचीन काल से ही लोग यहाँ दर्शनशास्त्र, संस्कृत, खगोलशास्त्र, सामाजिक ज्ञान एवं धार्मिक शिक्षा आदि के लिए आते रहे हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस नगर को धार्मिक, शैक्षणिक एवं कलात्मक गतिविधियों का केन्द्र बताया है। काशी नगरी वर्तमान वाराणसी में स्थित पौराणिक नगरी है। जगत की प्राचीनतम नगरी में से एक (सामान्य वाराणसी शहर को तीन हजार वर्ष प्राचीन माना जाता है किन्तु पौराणिक कथाओं के अनुसार, काशी नगर की स्थापना हिन्दू भगवान शिव ने लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व की थी)[1] काशी का उल्लेख *ऋग्वेद, रामायण, महाभारत, स्कन्दपुराण* सहित कई हिन्दू ग्रंथों में आता है।

प्रारम्भिक वैदिक साहित्य में वाराणसी (काशी), का उल्लेख न धार्मिक क्षेत्र में है न ही शिक्षा के क्षेत्र में। सर्वप्रथम उपनिषद काल में वाराणसी (काशी) एक सांस्कृतिक केन्द्र के रुप में परिलक्षित होता है। यह सातवीं शताब्दी ई. पू. से भारतीय, धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा का ख्यातिप्राप्त केन्द्र हो गया। ब्रह्मज्ञानी राज्ञा अजातशत्रु के समय में यह औपनिषदिक ज्ञान के लिए सुविख्यात थी। किंतु उस काल में शिक्षा के केन्द्र के रुप में तक्षशिला ही अग्रणी था। कालांतर में काशी की भी शिक्षा के केन्द्र के रुप में समग्र देश में प्रसिद्धि हो गयी और यहाँ भी दूर–दूर प्रान्तों से लोग उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए आने लगे। तक्षशिक्षा की भाँति काशी में भी वेदों के अतिरिक्त अठ्ठारह शिल्पों की शिक्षा दी जाने लगी। महात्मा बुद्ध के समय काशी पूर्वी भारत का निःसंदेह सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र था। संभवतः इसलिए बुद्ध ने भी सारनाथ में ही सर्वप्रथम अपने मत का प्रचार आरम्भ किया। तब से सारनाथ बौद्ध धर्म तथा बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा। अशोक ने सारनाथ को समृद्ध बनाने की पूरी चेष्टा की। उसने यहाँ मठ तथा स्तूप स्थापित करवाये। अनुमानतः बारहवीं शती ईसवी तक सारनाथ बौद्ध शिक्षा केन्द्र के रुप में क्रियाशील रहा। इसी शताब्दी में काशी के सनातनी राजा गोविन्दचन्द्र की बौद्ध रानी कुमारदेवी ने सारनाथ विहार को एक दानपात्र अर्पित किया। चीनी यात्री फाह्यान और युवानच्वांग (ह्वेनसांग) अपनी यात्रा के दौरान काशी आए थे। दुर्भाग्यवश सारनाथ की शिक्षा के संबंध में विशेष बातें उपलब्ध नहीं हैं। ह्वेनसांग भी इस संदर्भ में मौन दिखायी देता है। सारनाथ की शैक्षणिक प्रगति का कोई भी ज्ञान हमे ह्वेनसांग से नहीं मिलता। फिर भी ह्वेनसांग ने एक बड़ी संख्या में यहाँ के मठों का वर्णन किया है। ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध में यहाँ लगभग 30 बौद्ध विहार और 100 हिन्दू मन्दिर देखे थे। डॉ. अल्टेकर ने यह अनुमान लगाया गया है कि बारहवीं शताब्दी तक यह अवश्य ही शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना रहा होगा।[2]

बौद्ध धर्म की अवनति तथा हिंदू धर्म के पुनर्जागरण काल में काशी का महत्व संस्कृत भाषा तथा हिन्दू संस्कृति के केन्द्र के रुप में निरंतर बढ़ता ही गया, जिसका प्रमाण उस काल में लिखे गए या पुनः संपादित पुराणों द्वारा प्राप्त होता है। हिन्दू काल के पुनरुत्थान के समय काशी संस्कृत साहित्य एवं शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया। *स्कन्दपुराण* में तो स्वतंत्र रुप से काशी के महात्म्य पर 'काशीखंड' नामक अध्याय लिखा गया।[3] पुराणों में काशी को मोक्षदायिनी पुरियों में स्थान दिया गया है। काशी के शैक्षणिक रुप से सबल होने के चलते यहाँ मिलने वाले ज्ञान को मोक्षमार्ग में सहायक माना जाता रहा। *भविष्यपुराण* में इसके हिन्दू शिक्षा के विख्यात केन्द्र होने का विवरण मिलता है।[4] यहाँ नालन्दा की तरह कोई व्यवस्थित शिक्षा संस्था नहीं थी पर तक्षशिला की तरह यह भी एक नगर विद्यालय था जहाँ पण्डित अपने–अपने घरों में स्वाध्याय करते थे तथा उनके साथ रहने वाले शिष्य संस्कृत साहित्य के अक्षुण्ण भण्डार की शिक्षा पाते थे। गहड़वाल राजाओं के दानपत्रों से सूचित होता है कि संस्कृत साहित्य की शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए यहाँ पण्डितों को अनुदान मिलता था। प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थल होने के चलते काशी विद्वानों और पण्डितों की शरण स्थली थी। ये लोग अपने पृथक–पृथक अध्यापन केन्द्र चलाते थे। ब्राह्मणों एवं आचार्यों के कारण काशी प्रधान शिक्षा केन्द्र बन चुका था। नवीं शताब्दी ई. में जगदगुरु शंकराचार्य ने अपने विद्याप्रचार से काशी को भारतीय संस्कृति तथा नवोदित आर्यधर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र बना दिया। काशी में मंदिर पर्याप्त संख्या में थे। नवी–दसवीं शताब्दी में हिन्दू मंदिरों ने भी शिक्षण कार्य में बौद्ध विहारों का अनुकरण किया। काशी अब शिक्षा के उच्च केन्द्र के रुप में स्थापित हो चुका था। जब कभी पण्डितों में साहित्यिक वाद–विवाद होता था तो काशी के पण्डितों की बात या निर्णय को अन्तिम माना जाता था।[5]

कालान्तर में जब मुस्लिम आक्रमण भारत पर हुआ और उनकी संस्कृति का प्रसार होने लगा तो काशी की शिक्षा पर भी इसका प्रभाव पड़ा। किन्तु फिर भी संस्कृत साहित्य इसके प्रांगण में जीवित रहा। इसके अतिरिक्त मुगल बादशाह अकबर आदि ने भी इसको राज्याश्रय प्रदान किया। इसी का परिणाम है कि आज भी काशी संस्कृत साहित्य का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। पश्चिमी भारत के विद्वान भी मुस्लिम आक्रमण के दौर में यहाँ विद्वानों को मिलने वाली प्रशासकीय सुविधाओं व अनुदान आदि से आकर्षित होकर काशी में बसने लगे। यहाँ वेद, वेदांग, दर्शन, धर्मशास्त्र, काव्यशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी। इसीलिए बर्नियर ने लिखा है कि काशी एक विश्वविद्यालय था पर आधुनिक विश्वविद्यालयों की तहर यहाँ भवन, प्रशासन आदि का पूर्ण अभाव था।[6]

प्राचीन ज्ञानगंगा के अविरल प्रवाह में काशी की महिमा निरापद है। ब्राह्मण शिक्षा के क्षेत्र में यह शताब्दियों तक सर्वप्रथम रही। इसके

पाण्डित्य की धाक सम्पूर्ण देश में पूर्णतः जमी हुई थी। शंकराचार्य को भी अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए काशी के पंडितों की सहमति लेनी पड़ी थी। किन्तु बौद्ध शिक्षा केन्द्र नालन्दा की भाँति काशी में कोई सुव्यवस्थित शिक्षण संस्था विकसित न हो सकी। सुयोग्य शिक्षक ही व्यक्तिगत रुप में अपना विद्यालय चलाते थे। ग्यारहवीं शताब्दी ई. में मुस्लिम आतंक के कारण पंजाब से बहुत से पंडित उत्तर तथा पूर्व की ओर प्रवासित हुए। फलतः बारहवीं शताब्दी के कश्मीर तथा काशी, ये ही दो सबसे प्रमुख शिक्षा केन्द्र भारत में थे। बारहवीं शताब्दी ई. में काशी मुस्लिम साम्राज्य का अंग हो गयी जिसने यहाँ की शिक्षा प्रणाली को प्रभावित किया। फिर भी काशी ने शैक्षणिक केन्द्र के रुप में अपना अस्तित्व किसी न किसी प्रकार बनाए रखा।

## संदर्भ


1. रिचर्ड लैनोय, *बनारस–सीन फ्रॉम विदिन*, वाशिंगटन प्रेस विश्वविद्यालय, 1999.
2. ए. एस. अल्टेकर, *एजूकेशन इन ऐन्सेन्ट इण्डिया*, पृ. 114.
3. विशेष विवरण के लिए द्रष्टव्य, *स्कन्दपुराण*, चतुर्थखण्ड (काशी खण्ड)।
   विभिन्न विषयों के विस्तृत विवेचन की दृष्टि से *स्कन्दपुराण* सबसे बड़ा है। काशी खण्ड में काशीपुरी की प्रशंसा, काशी की यात्रा और परिक्रमा तथा काशी से सम्बन्धित अन्य पौराणिक बातों का विशद वर्णन मिलता है।
4. *भविष्यपुराण*, ब्रह्मखण्ड, पाठ 51/2,3.
5. बी. एन. लुणिया, *प्राचीन भारतीय संस्कृति*, प्रकाषक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11. पृ. 710.
6. बर्नियर, *ट्रवेल्स इन इण्डिया*, पृ. 341.